काला पादरी उपन्यास की विशिष्टता

जीत कौर

सार : समाज में बहुत से मानव समुदाय रहते हैं, जिनमें से कुछ शहरी सभ्यता में रहकर आधुनिक तौर तरीकों से जीवन यापन कर रहे हैं और कुछ समुदाय ऐसे हैं जो आज भी पहाड़ों पर शरण लेकर नारकीय जीवन जी रहे हैं, जिन्हें आदिवासी कहा जाता है। आदिवासी शब्द दो शब्दों 'आदि' और 'वासी' के योग से बना है। आदि का अर्थ है- 'मूल' अथवा 'पहला' तथा वासी का अर्थ है- रहने वाला अर्थात 'निवासी'। इस प्रकार आदिवासी शब्द से तात्पर्य है किसी देश या प्रांत के वे निवासी जो बहुत पहले से वहाँ रहते आए हों और वहाँ के मूल निवासी हों, आदिवासी कहलाते हैं। ये आदिवासी बहुत पहले से निर्जन एवं दूरस्थ क्षेत्रों में निवास कर रहे हैं और विकास के साधनों से दूर रहने के कारण इनका जीवन विकसित नहीं हो पाया है, जिसके कारण यह समुदाय जटिलताओं एवं अभावों में जकड़ता गया। साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से लेखकों ने आदिवासी समाज के जीवन, रहन-सहन, समाज एवं संस्कृति को उजागर करने का प्रयास किया है।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्य रूप से विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है तथा आधार पुस्तक के रूप में काला पादरी उपन्यास का आश्रय लिया गया है।

मूल शब्द : आदिवासी, सरगुजा, विश्रामगृह, बैंक प्रशासन, राजनीति, बपतिस्मा, धर्मांतरण, बैगा, अकाल, भूख, गरीबी, अंधविश्वास आदि।

प्रस्तावना : काला पादरी उपन्यास तेजिंदर का एक बहुचर्चित उपन्यास है। इसके केन्द्र में सरगुजा का दुर्गम क्षेत्र है, जहाँ बसे आदिवासी त्रासदीय जीवन जीने पर विवश हैं। आदिवासी समाज भारत के विभिन्न क्षत्रों में विभिन्न रुप से अभावपूर्ण एवं त्रासदीय जीवन जी रहे हैं। ये आदिवासी देश के मूल एवं प्राचीनतम निवासी हैं, जो प्रारम्भ से ही दूरस्थ एवं निर्जन स्थानों पर निवास करते रहे हैं। शहरी सभ्यता एवं विकास के साधनों से दूर रहने के कारण इनका जीवन अभावपूर्ण एवं मुख्यधारा से कटकर रह गया है, जिसके परिणामस्वरुप इनका जीवन दिन-प्रतिदिन समस्याओं एवं कष्टों का घेरा बनकर रह गया है। काला पादरी में लेखक ने अम्बिकापुर क्षेत्र के सरगुजा अँचल में बसे आदिवासियों के विभिन्न जीवन पहलुओं, परिस्थितियों, भावनाओं की जीवंतता को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त लेखक ने कुछ सरकारी कार्यालयों तथा साधनों का चित्रण भी इस उपन्यास में प्रस्तुत किए हैं, जिसका वर्णन इस प्रकार है-

लेखक ने छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर क्षेत्र के सरगुजा अंचल में बैंक प्रशासन की व्यवस्था का यथार्थ चित्रण करते हुए वहाँ के कर्मचारियों की भ्रष्ट नीतियों का पर्दा फाश किया है, जो अपने पद का लाभ उठाते हुए वहाँ के आदिवासी किसानों और मज़दूरों का शोषण करते हैं। बैंक की जिम्मेदारी होती है कि वह वहाँ के आदिवासी किसानों को हर तरह का ऋण देकर उनकी सहयता करे परन्तु जब कोई किसान बैंक से ऋण लेना चाहता है तो बैंक प्रशासन उनको दस्तावेजों में उलझाए रखता है। जैसे-तैसे आदिवासी किसान इन दस्तावेजों को एकत्र कर लेता है तो अंत में बैंक कर्मचारी द्वारा पूछा गया प्रश्न आदिवासी किसान को आहत करता है, जिसका उदाहरण देते हुए लेखक कहता है कि, "चलिए, किसी तरह नो- डयूज सर्टिफिकेट आपने इकट्ठा कर लिये और जब सब कागज तैयार हो गये तो फिर सवाल आया पहचान का। पहचान, यानि कि आईडेनटीफिकेशन।"[1] जिनकी पहचान अपने आप में एक चिंता का विषय है, उनसे यह प्रश्न पूछना उन्हें पीड़ित एवं शोषित करने के सिवाय और कुछ नहीं है।

इस अँचल में राजनैतिक मंत्रियों का आदिवासियों पर और वहाँ की प्रत्येक व्यवस्था प्रणाली पर उनकी धाक का चित्रण लेखक ने उपन्यास में स्पष्ट रुप से प्रस्तुत किया है। राय साहब जो स्वयं को इस अंचल का राजा मानते हैं, किस प्रकार इस पूरे क्षेत्र पर दृष्टि गड़ाए रखते हैं। बैंक के कार्यों में भी उसकी दृष्टि बाज की तरह बनी रहती है कि कहीं बैंक वाले उन लोगों पर पैसा बर्बाद तो नहीं कर रहे हैं, जो उनकी पार्टी के साथ नहीं हैं। इस दृश्य को आदिवासी ईसाई पादरी जैम्स खाखा बैंक कर्मचारी आदित्य से कहता है कि, " तुम राय साहब की एक तस्वीर अपने बैंक में क्यों नहीं लगा देते? कम से कम गाँधी की फोटो लगाने के पाखंड से तो बच जाओगे।"[2] एक आदिवासी ईसाई द्वारा इस तरह की व्यंग्यात्मक बात कहना वहाँ के बैंक प्रशासन की पाखंड व्यवस्था को ही दर्शाना है।

आदिवासी समाज में धर्मांतरण की प्रक्रिया इनके अस्तित्व पर सबसे बड़ा संकट है। किस प्रकार जब आदिवासी लोग आर्थिक विपन्नता से जूझकर अपने लिए अन्न की व्यवस्था में स्वयं को असमर्थ पाते हैं और भूख के कारण अंतिम साँसें लेते हैं तो धर्म के ठेकेदार उनकी विवशता का लाभ उठाते हुए उन्हें धर्मांतरण के लिए विवश करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में भी इस समस्या का चित्रण देखने को मिलता है कि किस प्रकार ईसाई मिशनरियों ने आदिवासियों की विवशता का लाभ उठाते हुए उनका धर्म परिवर्तन करवाकर उन्हें ईसाई बनाते हैं और दूसरी तरफ हिन्दु संगठन अपना दबाव डालते हुए आदिवासी ईसाइयों को हिन्दु बनाने की नीति बनाते हैं, इन दोनों स्थितियों में आदिवासी समाज जकड़ा हुआ है। ईसाई मिशनरी आदिवासियों को उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने की लालसा देकर उन्हें ईसाई बना देते हैं और प्रभु ईशु की कृपा बताकर आजीवन उन्हें अपना गुलाम बनाकर रखते हैं। जेम्स खाखा और आदित्य जब फादर मैथ्यूज से मिलते हैं तो आदित्य

फादर से प्रश्न करता है कि आप इनका धर्म कैसे परिवर्तित करते हो तो फादर उत्तर में आदित्य से कहता है कि, "न... न... यही तो ग़लतफ़हमी है कि हम उनको ईसाई बनाया, यह तो प्रभु की इच्छा से हुआ, राजा इन सब से बेगार कराता था, राजा का जो देवी लोग था, वह भी राजा बेटा का साथ देता था, खाखा बेटा का नहीं .... प्रभु ने इनको दूध दिया, खाना दिया, कपड़ा दिया, तो प्रभु का शुक्राना तो इनको देना था न, वह ये लोग दिया, हम इनका बपतिस्मा किया, ये प्रभु का इच्छा था।''[3]

फादर मैथ्यूज द्वारा आदिवासियों के अतीत को कुरेदना जेम्स खाखा को उद्विगन करता है, क्योंकि आदिवासी से ईसाई पादरी बनने के बाद भी उसे वह स्थान नहीं मिल सका था, जिस का वह अधिकारी था। इसी कारण शायद उसे आदिवासियों द्वारा ईसाई धर्म अपनाना न खुश था। फादर की बातें सुनकर आवेश में आकर वह कह देता है कि, "क्या ये सच नहीं कि हमारी इमेजेज़ में पहाड़ थे, नदियां थीं, पेड़ थे, चीते थे, और राजा ने हमें बंधुआ बना दिया, फिज़िकली और इक्नामिकली एक्सप्लायट किया, लेकिन आपने क्या किया? यू रादर टेम्ड अस, आपने हमें पालतू बना दिया, हमारे लिए हिंदू फंडामेंडलिस्टों और आपमें अब कोई खास फर्क नहीं है। हमारी सारी इमेजेज़ छीन लीं आप लोगों ने।"[4]

धर्म परिवर्तन के पश्चात भी समाज उनकी पहचान को स्वीकार नहीं पाता,बल्कि धर्मांतरित आदिवासी के रुप में ही देखता है। आदिवासी से ईसाई बनने के बाद भी उन्हें उपेक्षित एवं हीन भावना से देखा जाता है। इस दुखद पीड़ा का वर्णन उपन्यास की एक पात्र जेम्स खाखा की बहन अनास्तसिया के शब्दों में स्पष्ट देखने को मिलता है। जब वह घर आए आदित्य से कहती है- "देखो इस तरह 'पापुलिस्ट' बातें करना बहुत आसान होता है, लेकिन इन ए रीयल सैंस तुम बताओं कि अपने से बाहर की सोसाइटी में कौन हमें एक्सेप्ट करता है, इस देश के बड़े शहरों की जो सोसाइटी है उनमें आज भी हम सिर्फ आदिवासी हैं, कन्वर्टेड हैं, उनका हमारे ओर देखने का ढंग एक तरफ से जंगलियों की तरफ देखने का ढंग है।" 5 ईसाई बनने के उपरांत भी उन्हें जाहिल ही समझा जाता है और उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी समाधि एक ईसाई की समाधि की तरह नहीं दिखाई पड़ती, जिसका उदाहरण यह पंक्ति है- "पता नहीं कितने टोप्पो, मिंज, तिग्गा, लकड़ा, और खाखा थे जो बेगार की मज़दूरी करते करते अचानक बेगार की प्रार्थना में शामिल हो गये थे और फिर मर गये थे, जैसे कि उन्हें मरना था। जैसे कि हर कोई मरता है। पर वे ज्यों अपने ही गांव की ज़मीन में फिर से बो दिये गये थे। इनकी क़ब्रों पर न तो फूल थे और न ही संगमरमर की पटिटकाओं पर अंग्रेजी में कुछ लिखा था: 'इन द लविंग मेमोरी ऑफ़.....'।" [6]

आर्थिक अभाव के कारण सरगुजा के आदिवासियों का भयावह चित्रण लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है। अर्थ की कमी होने के कारण ही ये लोग शिक्षा से दूर तो होते ही हैं साथ ही और भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से भूख भी एक मुख्य कठिनाई है जो आदिवासियों की सांसे छीन

लेती है। भूख के कारण व्यक्ति किस प्रकार धीरे-धीरे मौत की ओर जाता है, इसका उदाहरण उपन्यास में जेम्स खाखा की ये पंक्तियां हैं– "तुम जानते हो भूख से आदमी की मौत किस तरह होती है?" स्वयं इस प्रश्न का उतर देते हुए वह पुन: कहता है- "पहले दिन जब चावल का दाना मुँह में नहीं जाता तो लगता है कि जैसे कुछ गुम हो गया है, पर उम्मीद रहती है कि कल तक मिल जायेगा, अगले दिन भी जब चावल का दाना नहीं मिलता तो आस खत्म होने लगती है, पर लगता है कि चलो एक दिन और, पर तीसरे दिन के बाद सोचना पड़ता है कि चावल का स्वाद मुँह में घुलेगा भी या नहीं, आदमी उसकी गंध तक भूल जाता है ,… पहले देह की शक्कर सूखती है, फिर नमक, फिर पानी, फिर खून का बहना और आखिर आपकी साँस रुकने लगती है।" [7]

आर्थिक अभाव के कारण इस क्षेत्र के लोगों को गरीबी से भी जूझना पड़ता है। गरीबी के कारण ये लोग अपने बच्चों को हर तरह की सुविधा देने में असमर्थ हैं। वह अपने बच्चों की इच्छाएँ तो दूर उनकी जरूरतें भी पूर्ण नहीं कर पाते हैं। छोटे-छोटे बच्चों को भूख का सामना करना पड़ता है। पेट भर खाना ना मिलने के कारण ये बच्चे अपनी उम्र से अधिक छोटे जान पड़ते हैं। छोटे और बड़े बच्चों के बीच उम्र का कोई फ्रक नहीं जान पड़ता- "बाईस-तईस साल की लड़की और चार-पांच साल की बच्ची के बीच उनका चेहरा देख कर उम्र का भेद कर पाना बहुत मुश्किल है। यह अजीब है।"[8] किशोर बालाओं के तन पे फटा पुराना कपड़ा दिखाई देता है परन्तु छोटे बच्चे और बच्चियों को तो कपड़ा क्या होता है इसका शायद पता ही नहीं है।

सरगुजा का यह क्षेत्र जहां लोग भूख के कारण बिलख रहे हैं तो सामान्य सी बात है कि शिक्षा से दूर-दूर तक इनका नाता भी नहीं होगा, जिसके कारण यहां के लोग अंधविश्वास के अंधेरे और अज्ञानता के दलदल में डूबे हैं। अंधविश्वास इतना फैला हुआ है कि लोग भूखमरी का शिकार हो रहे हैं और उन्हें रोटी देने की बजाय बैगा के पास लिया जा रहा है। बैगा उस भूखे व्यक्ति के भीतर प्रेतात्मा का वास बताकर उसे झाड़- फूक तथा प्रेतात्मा को भागने के कई प्रयास कर रहा है। जेम्स खाखा दूर से इस दृश्य को देखकर कहता है, "इस आदमी को देवता नहीं, चावल बचा सकते हैं।"[9] बैगा प्रेत को भगाने के निरंतर प्रयास करता है परन्तु असफल हो जाता है और व्यक्ति अपने प्राण त्याग देता है। अकाल पड़ने पर जब चारों तरफ सूखा पड़ जाता है और लोग निरंतर भूख से मरते हुए दिखाई देते हैं तो जेम्स खाखा ईश्वर से प्रार्थना करता है, "ए ईश्वर ! परमपिता परमेश्वर ! मैं सच्चे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि इस साल हमारे गांव में हाथी फिर भेजना और हाथियों को आशिर्वर्चन देना ईश्वर कि वे हमारे झोंपड़े तहस- नहस करने हमारे घर पर अवश्य आयें।"10 लोग ईश्वर से हमेशा अपने घर बने रहने की कामना करते हैं परन्तु यहाँ स्थिति विपरीत दिखाई जान पड़ती है। वह ईश्वर से ये प्रार्थना इसलिए करता है ताकि हाथियों द्वारा उनके झोंपड़े नष्ट होने पर सरकार द्वारा वहाँ के लोगों को कुछ पैसे दिए जाए और वे अकाल के इस घातक समय से खुद को बचा पाए।

आदिवासी पादरी जब अपने चारों ओर लोगों को भूख से मरते देखता है तो वह चर्च के मुख्य पादरी बिशपस्वामी से लोगों को इस स्थिति से बचाने की गुहार करता है और वह साफ-साफ कहता है- "हमारी भूमिका उन लोगों के साथ जुड़ी है जिनके हाथ हमारे धर्म का प्रचार जुड़ा है।"[11] जेम्स खाखा अपने आदिवासी लोगों की सहायता करना चाहता है, उन्हें इस कठिन परिस्थिति से बचाना चाहता है परन्तु कुछ भी नहीं कर पाता है।

अशिक्षा व अज्ञानता के कारण यहाँ के आदिवासी लोग अपने किसी दस्तावेज को भरने में भी असमर्थ हैं। अपनी जमीन में डीजल-पंप खोलने के लिए आदिवासी किसान बैंक से ऋण लेता है, जहां वह केवल हस्ताक्षर के स्थान पर अँगूठा लगाता है और बाकी की सारी जानकारी ग्रामसेवक लिखता है। अशिक्षित होने के कारण वह हिसाब-किताब करने में भी असमर्थ होता है, जिसका लाभ अन्य व्यक्ति लेते हैं, जिसका उदाहरण उपन्यास की ये पंक्तियाँ हैं, "ईट के भट्ठे वाले से लेन–देन का हिसाब तय करने के बाद व्यापारी सत्रह हजार चार सौ आठ रुपये की जगह चौबीस हजार आठ सौ नब्बे रुपये का बिल तैयार करता है और सात हजार चार सौ बयासी रुपये का बंटवारा हो जाता है।"[12] लोग शिक्षित होकर भी अशिक्षितों से किस तरह का व्यहवार कर रहे है।

निष्कर्ष : अत: यह कहा जा सकता है कि तेजिंदर द्वारा लिखा गया काला पादरी उपन्यास अंबिकापुर क्षेत्र के सरगुजा अंचल में बसे आदिवासी उराव जनजाति की पीड़ा, दुख, उनका रहन-सहन एवं परस्थितियों का यथार्थ है, जिसे लेखक ने बहुत ही मार्मिकता से चित्रित किया है। इसके अतिरिक्त ईसाई मिशनरियों का सरगुजा के आदिवासियों की विवशताओं का लाभ उठाते हुए उनको ईसाई बनाने की नीति एवं इसके उपरांत उन्हें कुछ सुविधा देकर पुरी उमर अपने अनुशासन में दबाये रखने की दारुण कथा तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों एवं राजनैतिक सदस्यों की भ्रष्टता का दस्तावेज प्रस्तुत उपन्यास है। अभावग्रस्त आदिवासियों को किस तरह से ईसाई मिशनरियों और पद प्रतिष्ठित लोगों द्वारा दबाया जाता है इसका स्पष्ट चित्रण काला पादरी में देखा जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तेजिंदेर, काला पादरी, सहित्य भण्डार प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण- 2016, पृ. 20
2. वही, पृ. 23
3. वही, पृ. 56
4. वही, पृ. 57
5. वही, पृ. 121
6. वही, पृ. 67
7. वही, पृ. 35 , 36
8. वही, पृ. 64
9. वही, पृ. 87
10. वही, पृ. 62
11. वही, पृ. 142
12. वही, पृ. 20

जीत कौर,
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय,
हजरतबल,श्रीनगर